© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 06 Issue: 07 | October-December 2015

संत नितानन्द और लोक संस्कृति

डॉ. नीलम, सहायक प्राध्यापक, हिन्दू कन्या महाविद्यालय, जीन्द।

लोक शब्द का अर्थ जनसामान्य से है। अर्थात् वह वर्ग जो संस्कार युक्त व पाण्डित्य के अहंकारों से विहीन होने के साथ ही परम्परा के प्रवाह में जीवित है। जिसमें न केवल भूत व वर्तमान अपितु भविष्य भी संचित रहता है। वहीं संस्कृति उस सीखे हुए व्यवहार का नाम है जो सामाजिक परम्परा के उन गुणों का समावेश है जो एक व्यक्ति को परिष्कृत एवं समृद्ध बनाती है।

लोक संस्कृति तो उन तत्वों का समावेशन है जिसे सुरक्षित रखने के लिए किसी प्रयास की आवश्यकता नहीं ये तो हमारी पैतृक सम्पदा की भांति 'पीढ़ी – दर – पीढ़ी चलती है। जिसमें आध्यात्मिकता, संस्कृति और साहित्य तीनों का समन्वय है। डॉ. पूर्णचन्द शर्मा जी तो मानते है –

'लोक साहित्य वह संजीवनी है जिसका स्पर्श पाकर मूर्च्छित प्रतिभा पुनः जीवन्त हो उठती है।'[1]

लोक साहित्य में संचित लोक संस्कृति तो बहती हुई उस गंगा की भांति है जो अपना मार्ग स्वयं बनाती हुई विभिन्न संस्कारों और परम्पराओं को सहेजती हुई अनायास ही प्रवाहित रहती है। जिसमें केवल संस्कार व परम्पराओं रूपी प्रवाह शामिल रहता है। डॉ॰ देवी शंकर प्रभाकर जी के अनुसार –

''लोक संस्कृति तो बिना किसी हस्तक्षेप के अपनी नैसर्गिक एवं स्वाभाविक गति से जन–मानस की जीवनधारा बनकर सदैव गतिमान रही, हजारों वर्षों की इतिहास – यात्रा तय करके भी उसने अपने प्राचीन संस्कारों को सहेजे रखा और साथ–साथ नए–नए अनुभवों एवं विचार बोधों को भी जोड़ती चली गई।[2]

सन्त नितानन्द जी हरियाणा के निवासी थे। उनका साधना क्षेत्र भी यही प्रदेश रहा है। उनके साहित्य में लोक संस्कृति के तत्व प्रायः दृष्टिगोचर होते है। उनका ध्येय लोक जीवन का चित्रण करना नहीं, वरन् अपनी आध्यात्मिक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति मात्र है। ग्रामीण प्रदेश ही उनकी साधना स्थली थी। आध्यात्मिक तथा दार्शनिक गूढ़ता को सामान्य जन तक पहुंचाने के लिए लोकवाणी की अनेक झांकियां इनकी रचनाओं में विद्यमान है। जिसमें ग्राम्य जीवन, रीति–रिवाज, त्यौहार, खान–पान, वेशभूषा, आदि लोक संस्कृति के विभिन्न उपादान मिलते हैं। उनकी वाणी में आध्यात्मिकता एवं सामाजिकता का अत्यन्त सुन्दर समन्वय प्राप्त होता है।

हरियाणा में कृषि यहां का मुख्य व्यवसाय है। नितानन्द जी को कृषि का ज्ञान था वो अपने शिष्य की तुलना किसान की नीची जमीन की गुणवत्ता से करते हुए कहते हैं :–

''नितानन्द वे सफल फलैंगे जिनके खेत नवान।''[3]

किसान द्वारा खेतों में हल चलाकर उसे समतल बनाने हेतु मैज लगाने को नितानंद जी उसी प्रकार सामान्य जीवन से जोड़ते है। जिस प्रकार परमात्मा सृष्टि के विनाश हेतु मृत्यु रूपी मैज का प्रयोग करता है –

'मौत मैज आवै चल्या, सुमर गोपाल गोपाल'[4]

इसी भांति 'जन्म–मरन खूँटा गड़ा और जन्म मरण की जेवड़ी काट सके तो काट' कहकर कहीं तो जन्म–मरण की तुलना किसान के खूँटे से तो कहीं उसे जेवड़ी कहा है।

---

[1] हरियाणा लोक साहित्य, डॉ॰ पूर्ण चन्द्र शर्मा पृष्ठ 110

[2] हरियाणा की लोक संस्कृति : परम्परा एवं स्वरूप, देवी शंकर प्रभाकर – हरियाणा, पुरातत्व, इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं लोक वार्ता, पृष्ठ – 172 सम्पादक – जयभगवान गोयल

[3] संत नितानन्द, सत्य सिद्धान्त प्रकाश पृ॰ 437/111

[4] संत नितानन्द, सत्य सिद्धान्त प्रकाश पृ॰ 14/20

लोक संस्कृति का वर्णन ग्रामीण परिवेश में प्रयोग की गई आजतक भी हाथ द्वारा चक्की से आटा पीसने में दिखाई देती है जिसका वर्णन नितानन्द जी ने भी किया है –

नितानन्द बूढ़े हुए, जोबन किया पयान।

खोखस – खोखस रह गया, चून–चून लिया छान।'[1]

खोखस अर्थात् छना हुआ चौकर जो सार रहित है उसी प्रकार तारूण्य एवं वृद्धावस्था के वर्णन के संदर्भ में नितानन्द जी उसकी सार्थकता को चून व सारहीनता को खोखस की उपमा देते हैं।

ग्रामाचल के निर्धन लोगों द्वारा कच्चे घरों व घास–फूस द्वारा आनन्दपूर्ण जीवन को नितानन्द जी इन शब्दों में वर्णित करते हैं :–

झूठे घर जल जायेंगे, यथा फूस की छान।"

मिथ्यावादियों के घर फूस की छान की भांति क्षणभर में ही नष्ट हो जाते हैं, जबकि सत्यवादी भय रहित होकर सानन्द जीवनयापन करते हैं।

गांव के सम्पन्न लोगों की वेशभूषा का वर्णन उनकी वाणी में मिलता है :–

''पाटपटम्बर पहने, श्री साफ चौतार''[2]

''टेढ़ी पगड़ी बांधते देखत चलते छांह''[3]

होली का पर्व सामाजिक व्यंग्य विनोद का भी जीवन्त अखाड़ा है। व्यंग्य तथा विनोद लगभग हर गीत में समाया हुआ है।

डॉ॰ भीम सिंह मलिक कहते हैं –

''फाग के गीतों की मूल प्रकृति ही विनोद की माया का सृजन करती है।''[4]

नितानन्द जी के काव्य में होली के हुड़दंग के प्रसंग का भी वर्णन है।

'भर मारी पिचकारी, मेरी अंगिया, धरक गई सारी।''[5]

इसी के साथ हरियाणा की लोक संस्कृति में बिछौने के रूप में प्रयुक्त गूदड़ा, गूदड़ी का भी इन्होंने प्रयोग किया है –

''गुदड़ी बिखारी जात है, चादर महंगे मोल की दिन–दिन मैली होय।''[6]

वहीं ग्रामीण अंचल में प्रयुक्त पीतल, कांसी आदि धातुओं के बर्तनों के लिए प्रयुक्त शब्द कासण, बासण आदि का प्रयोग भी नितानन्द जी द्वारा किया गया है।

'काचे बासन' की तुलना शरीर की क्षणभंगुरता से करते हुए नितानन्द जी कहते हैं –

'नितानन्द नहिं गरभिये, गर्व किये दुख होय।

काचे बासन जल भरा, सुख नीदड़ी न सोय।।''[7]

नितानन्द जी की वाणी में पारिवारिक जीवन की भी संस्कृति दिखाई देती है। ग्रामीण स्त्रियों द्वारा पर्दा प्रथा, प्रियतम के प्रति प्रेम, सांस द्वारा व्यंग्य करना विविध प्रसंगों में परम्परा आज भी तरोताजा बनी हुई है –

---

[1] वहीं पृ॰ 102/30

[2] वहीं पृ॰ 192/15

[3] वहीं पृ॰ 109/114

[4] हरियाणा लोक साहित्य सांस्कृतिक संदर्भ – डॉ॰ भीम सिंह मलिक

[5] वहीं पृ॰ 393/48

[6] वही पृ॰ 120/234

[7] वही पृ॰ 258/6

'सास–ससुर के बोल सहूंगी, पटीर को डर भारी।"[1]

ग्रामीण वनस्पतियों व जीव–जन्तुओं का भी वर्णन इनके काव्य में व्याप्त है। इसके साथ विभिन्न रीति–रिवाज के संस्कारों को इनकी वाणी में देखा जा सकता है जिसमें सती प्रथा, विवाह प्रथा, फगवा प्रथा आदि का भी वर्णन मिलता है। सती प्रथा का चित्रण नितानन्द जी इस प्रकार करते हैं :–

''सती सिंधोरा धर चली, यों धुन पर सिर मेले।''[2]

फगवा प्रथा में पति अपनी पत्नी को उपहार भेंट करता है। स्वयं नितानन्द जी अपने गुरूवर से फगुवा दिए जाने की विनती करते हैं :–

'अजहुं समझ महबूब गुमानी, नितानन्द को फगवा दीजै।''[3]

हरियाणवी लोक जीवन में धार्मिक भावना अत्यधिक मिलती है जिसमें आत्मा, परमात्मा, पुनर्जन्म, चौरासी लाख योनियों का वर्णन है। तीर्थ यात्रा, तीर्थस्थान, नारद, ध्रुव, प्रह्लाद, रंभा, उर्वशी आदि के वर्णन के साथ ही ग्रामीण लोक जीवन में प्रचलित लोक विश्वास व मान्यताओं का वर्णन जिसमें भाग्यवाद, स्वप्न आदि का वर्णन भी नितानन्द जी की वाणी में परिलक्षित होता है।

'सुमरण ते ध्रुव अटल है, रही पैज प्रह्लाद, नितानन्द जी संकर अमर, बाल रूप सनाकाद।''[4] में नारद का सहस्रमुख वाले शेषनाग का वर्णन मिलता है तो इन पंक्तियों में भाग्यवाद का :–

''साधूजन और लछमी, बड़भागी के जाहिं।
भागहीन को ना मिलें, भटक–भटक मर जाहि।''[5]

इस प्रकार नितानन्द जी की वाणी में लोक जीवन की संस्कृति के विविध पहलुओं का चित्रण अनायास ही व्याप्त है। यद्यपि लोक जीवन का चित्रण करना उनका ध्येय नहीं रहा है। फिर भी लोक संस्कृति के समस्त तत्व अत्यन्त स्वाभाविकता के साथ इनकी वाणी में समाहित हो गए है।

डॉ॰ बाबू राम व रघुबीर सिंह मथाना जी इनके शुद्ध प्रेम के विषय में कहते हैं :–

''इनके वर्णन में सिद्धान्त पक्ष की गौणता तथा आसक्ति और औत्सुक्य की प्रधानता है क्योंकि इन्होंने प्रेम को प्रमुखता दी है।"[6]

यद्यपि इन्होंने गूढ़ रहस्यों को सर्व सुलभ बनाने हेतु सामान्य जन–जीवन से लौकिक उपादानों को ग्रहण कर उनमें अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना की है। हरियाणवी लोक जीवन की संस्कृति तथा आध्यात्मिकता का जैसा सुन्दर समन्वय सहज रूप से लोकवाणी में इन्होंने किया है वैसा वर्णन अत्यंत्र नहीं मिलता।

हरियाणा के लोक साहित्य के विषय में डॉ॰ शशि भूषण सिंहल ने वर्णित किया है।

''हरियाणा के लोक साहित्य में लोक जीवन के उन्नायकों द्वारा आदर्शों का विशद विवेचन ही नहीं हुआ अपितु समाज को विकलांग बनाने वाली कुप्रथाओं पर भी तीखे व्यंग्य बाण बरसाए गए है।''[7]

अतः सन्त नितानन्द जी की वाणी आध्यात्मिकता, लोक संस्कृति और साहित्य की त्रिकोणात्मक समन्वय की अनुभूति है। जिसमें लोक जीवन के समस्त पहलुओं का अत्यन्त स्वाभाविक चित्रण विद्यमान है।

---

[1] वही पृ॰ 393/48/3
[2] वही पृ॰ 354/39
[3] वहीं पृ॰ 390/41
[4] वहीं पृ॰ 20/48
[5] वहीं पृ॰ 217/51
[6] हरियाणवी साहित्य का इतिहास – रघुबीर सिंह मथाना, डॉ. बाबू राम, पृ0 294
[7] हिन्दी साहित्य को हरियाणा का योगदान :– डॉ॰ शशिभूषण सिंहल सं॰ सत्यपाल गुप्त, पृ॰ 121

सन्दर्भ सूची

1. संत नितानन्द : सत्य सिद्धांत प्रकाश,
हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़।
जे॰ एस॰ प्रिंटर्स, चौ॰ ब्रह्मसिंह मार्ग, पुराना मौजपुर, दिल्ली – 110053

2. डॉ॰ भीम सिंह मलिक : हरियाणा लोक साहित्य सांस्कृतिक संदर्भ। (हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़) प्रकाशन – डॉ॰ पृथ्वी राज कालिया, भारत फोटो कम्पोजर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली – 110032

3. डॉ॰ भगवान गोयल : हरियाणवी लोक साहित्य
आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली – 110006

4. डॉ॰ राजबीर धनखड़ : हरियाणवी साहित्य का इतिहास,
सुकीर्ति प्रकाशन, डी॰सी॰ निवास के सामने, करनाल रोड़, कैथल – 136027 (हरियाणा)

5. डॉ॰ शशिभूषण सिंहल : हिन्दी साहित्य को हरियाणा का योगदान। सं॰ – सत्यपाल गुप्त (हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़) – 1991 जार्ज प्रिंटिंग वर्क्स, मनीमाजरा, चण्डीगढ़।

6. डॉ॰ लालचन्द गुप्त 'मंगल' : हरियाणा का लोक साहित्य
सूर्यभारती प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली– 110006

7. रघुबीर सिंह मथाना : हरियाणवी साहित्य का इतिहास
डॉ॰ बाबू राम, लक्ष्मण साहित्य प्रकाशन, दुर्गा कालोनी,
जेल रोड़, रोहतक – 124001

8. डॉ॰ जयभगवान गोयल : हरियाणा, पुरातत्व, इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं लोकवार्त्ता, आत्माराम एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली–110006

9. डॉ॰ रामकुमार भारद्वाज : हरियाणा के सन्त कवि : नितानन्द (हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़)

10. डॉ॰ पूर्ण चन्द शर्मा : हरियाणा लोक साहित्य
हिन्दी साहित्य को हरियाणा का योगदान, डॉ॰ शशिभूषण सिंहल सं॰ सत्यपाल गुप्त

11. देवी शंकर प्रभाकर : हरियाणा की लोक संस्कृति :
परम्परा एवं स्वरूप
हरियाणा पुरातत्व इतिहास, संस्कृति साहित्य एवं लोकवार्ता सम्पादक – जयभगवान गोयल, आत्माराम एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली–110006